चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब केसरी.....

दिनांक 8.12.2020.....पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....4-5.....

'लिंग संवेदीकरण-मुद्दे और चुनौतियां' विषय पर विशेषज्ञों ने रखे विचार'

हिसार, 7 दिसम्बर (ब्यूरो): अभिभावकों को बेटा व बेटी में फर्क नहीं समझना चाहिए, बल्कि उन्हें आगे बढ़ने के समान अवसर प्रदान करने चाहिए। लड़का व लड़की से उन्हें समान अपेक्षाएं भी रखनी चाहिए। साथ ही अभिभावक अपने बच्चों को एक-दूसरे का सम्मान करना भी सिखाएं। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान महाविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से 'लिंग संवेदीकरण-मुद्दे और चुनौतियां' विषय पर आयोजित विचार मंथन सत्र के दौरान निकलकर सामने आए। कार्यक्रम का आयोजन नैशनल एग्रीकल्चरल साइंस फंड (एन.ए.एस.एफ.) एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में इंदिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय की ओर से किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों ने हिस्सा लिया और अपने विचार रखे।

गृह विज्ञान महाविद्यालय में आयोजित विचार मंथन कार्यक्रम के तहत मौजूद वक्ता एवं प्रतिभागी।

होम साइंस महाविद्यालय की अधिष्ठाता डा. बिमला ढांडा ने कहा कि एक सशक्त समाज के लिए लिंग समानता बहुत ही जरूरी है। समानता एक सुंदर और सुरक्षित समाज की वह नींव है जिस पर विकासरूपी इमारत बनाई जा सकती है। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के कम्युनिटी साइंस महाविद्यालय की पूर्व अधिष्ठाता व सेवानिवृत्त डा. जतिंदर गुलाटी ने कहा कि महिलाएं एक हिंसा मुक्त परिवेश में सम्मानपूर्वक जीवन जी सकें, इसके लिए उन्हें सहयोग देने के साथ-साथ उनका आर्थिक सशक्तिकरण भी जरूरी है। उन्होंने महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य व उनको प्रभावित करने वाले कारकों पर भी प्रकाश डाला। सेवानिवृत्त प्रोफैसर लाली यादव, डा. कृष्णा दूहन, डा. नीलम रोज, डा. संगीता सी. सिंधु, पूनम मलिक के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों ने अपने विचार रखे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.......अमर उजाला.......

दिनांक 8.12.2020 पृष्ठ संख्या....4....कॉलम....7....

'सशक्त समाज के लिए लैंगिक समानता जरूरी'

हिसार (ब्यूरो)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान महाविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से 'लिंग संवेदीकरण-मुद्दे और चुनौतियां' विषय वेबिनार का आयोजन किया गया। इस दौरान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बिमला ढांडा ने कहा कि एक सशक्त समाज के लिए लैंगिक समानता बहुत ही जरूरी है। समानता एक सुंदर और सुरक्षित समाज की वो नींव है जिस पर विकास रूपी इमारत बनाई जा सकती है। डॉ. जतिंदर गुलाटी ने कहा कि महिलाएं एक हिंसा मुक्त परिवेश में सम्मानपूर्वक जीवन जी सकें, इसके लिए उन्हें सहयोग देने के साथ-साथ उनका आर्थिक सशक्तीकरण भी जरूरी है। प्रो. लाली यादव ने कहा कि लैंगिक संवेदीकरण के लिए जो नीतियां बनाई जाती हैं, उनको जमीनी स्तर पर शोध करके ही लागू करना चाहिए। इसके लिए महिलाओं व पुरुषों के साथ-साथ सभी आयुवर्ग के लोगों को जागरूक किया जाना चाहिए। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान महाविद्यालय की प्राध्यापकों, जिला बाल समेकित विभाग की अधिकारियों के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों ने अपने विचार रखे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........दैनिक भास्कर........

दिनांक 8.12.2020 पृष्ठ संख्या 2 कॉलम 2-4

एचएयू में 'लिंग संवेदीकरण-मुद्दे और चुनौतियां' पर विचार मंथन सत्र आयोजित

बेटा-बेटी में फर्क न समझें अभिभावक एक-दूसरे का सम्मान करना सिखाएं

भास्कर न्यूज | हिसार

अभिभावकों को बेटा व बेटी में कोई फर्क नहीं समझना चाहिए बल्कि उन्हें आगे बढ़ने के समान अवसर प्रदान करने चाहिए। लड़का और लड़की से उन्हें समान अपेक्षाएं भी रखनी चाहिए। साथ ही अभिभावक अपने बच्चों को एक-दूसरे का सम्मान करना भी सिखाएं।

उक्त विचार एचएयू के गृह विज्ञान महाविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से 'लिंग संवेदीकरण-मुद्दे और चुनौतियां' विषय पर आयोजित विचार मंथन सत्र के दौरान वक्ताओं ने कहे। कार्यक्रम का आयोजन नेशनल एग्रीकल्चरल साइंस फंड (एनएएसएफ) एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में इंदिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय की तरफ से किया गया। होम साइंस कॉलेज की अधिष्ठाता डॉ. बिमला ढांडा ने कहा कि एक सशक्त समाज के लिए लिंग समानता बहुत ही जरूरी है।

गृह विज्ञान महाविद्यालय में आयोजित विचार मंथन कार्यक्रम के तहत मौजूद वक्ता एवं प्रतिभागी।

सरकार ने महिलाओं के खिलाफ हिंसा को समाप्त करने को अपनी प्राथमिकता बनाया है। साथ ही उनकी तस्करी, घरेलू हिंसा तथा यौन शोषण रोकने के लिए विशेष उपाय किए। नीतिगत कार्यक्रम में लैंगिकता को प्रस्तावित और एकीकृत करने के लिए प्रयास भी किए हैं। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान की शुरुआत की गई, जिसे राष्ट्रीय स्तर पर संचालित किया जा रहा है।

सहयोग के साथ आर्थिक सशक्तिकरण भी जरूरी

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के कम्युनिटी साइंस महाविद्यालय की पूर्व अधिष्ठाता व सेवानिवृत्त डॉ. जतिंदर गुलाटी ने कहा कि महिलाएं एक हिंसा मुक्त परिवेश में सम्मानपूर्वक जीवन जी सकें, इसके लिए उन्हें सहयोग देने के साथ-साथ उनका आर्थिक सशक्तीकरण भी जरूरी है। उन्होंने महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य व उनको प्रभावित करने वाले कारकों पर भी प्रकाश डाला। एचएयू से सेवानिवृत्त प्रो. लाली यादव ने कहा कि लिंग संवेदीकरण के लिए जो नीतियां बनाई जाती हैं उनको जमीनी स्तर पर शोध करके ही लागू करना चाहिए। कार्यक्रम की परियोजना प्रभारी डॉ. कृष्णा दूहन ने प्रतिभागियों व वक्ताओं का स्वागत किया और डॉ. नीलम रोज ने विचार मंथन सत्र के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. संगीता सी सिंधु व पूनम मलिक ने संयुक्त रूप से किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब केसरी.....

दिनांक ..8..12..2022.....पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....7-8.....

गांव सदलपुर में विश्व मृदा दिवस पर किसानों को जानकारी देते कृषि वैज्ञानिक। (भारद्वाज)

'रासायनिक खादों के प्रयोग से उत्पादन क्षमता हो रही प्रभावित'

मंडी आदमपुर, 7 दिसम्बर (भारद्वाज): गांव सदलपुर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा विश्व मृदा दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें किसानों को विश्व मृदा दिवस बनाने के उद्देश्य व इसके संरक्षण के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई।

कृषि विज्ञान केंद्र के संयोजक डा. नरेंद्र कुमार ने बताया कि विश्व मृदा दिवस मनाने का उद्देश्य किसानों को मिट्टी की उपयोगिता व संरक्षण के बारे में जागरूक करना है। हरित क्रांति के बाद रासायनिक खादों के प्रयोग से भूमि का कार्बनिक जीवाश्म कम होने की वजह से उत्पादन क्षमता प्रभावित हुई है और गोबर की खाद, केंचुआ खाद, हरी खाद आदि का न प्रयोग करना भूमि का स्वास्थ्य उत्पादन कम होने का मुख्य कारण है। केंद्र की विशेषज्ञ डा. विनीता जैन, अजीत सांगवान, डा. कुंडू, डा. ज्योति ने बताया कि देश की बढ़ती आबादी को भरपेट भोजन सुनिश्चित करने के लिए मृदा का स्वास्थ्य बरकरार रखना बहुत जरूरी है। इसलिए किसानों को समय-समय पर मिट्टी की जांच करवानी चाहिए और ट्यूबवैल का पानी भी जांच के बाद ही खेत को देना चाहिए। उन्होंने किसानों को जैविक खेती, प्राकृतिक खेती व किचन गार्डनिंग आदि की संपूर्ण जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**07.12.2020**	--	--

एचएयू में 'लिंग संवेदीकरण-मुद्दे और चुनौतियां' विषय पर विशेषज्ञों ने किया विचार मंथन

पांच बजे न्यूज

हिसार। अभिभावकों को बेटा व बेटी में कोई फर्क नहीं समझना चाहिए बल्कि उन्हें आगे बढ़ने के समान अवसर प्रदान करने चाहिए। लड़का व लड़की से उन्हें समान अपेक्षाएं भी रखनी चाहिए। साथ ही अभिभावक अपने बच्चों को एक-दूसरे का सम्मान करना भी सिखाएं। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान महाविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से 'लिंग संवेदीकरण-मुद्दे और चुनौतियां' विषय पर आयोजित विचार मंथन सत्र के दौरान निकलकर सामने आए। कार्यक्रम का आयोजन नेशनल एग्रीकल्चरल साइंस फंड (एनएएसएफ) एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में इंदिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय की ओर से किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों ने हिस्सा लिया और अपने विचार रखे। विश्वविद्यालय के होम साइंस महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बिमला ढांडा ने कहा कि एक सशक्त समाज के लिए लिंग समानता बहुत ही जरूरी है। समानता एक सुंदर और सुरक्षित समाज की वो नींव है जिस पर विकासरूपी इमारत बनाई जा सकती है। उन्होंने बताया कि सरकार ने महिलाओं के खिलाफ हिंसा को समाप्त करने को अपनी प्राथमिकता बनाया है। साथ ही उनकी तस्करी, घरेलू हिंसा तथा यौन शोषण रोकने के लिए विशेष उपाय किए हैं। नीतिगत कार्यक्रमों में लैंगिकता को प्रस्तावित और एकीकृत करने के लिए प्रयास भी किए गए हैं।

सहयोग के साथ आर्थिक सशक्तिकरण भी जरूरी : डॉ. गुलाटी

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के कम्युनिटी साइंस महाविद्यालय की पूर्व अधिष्ठाता व सेवानिवृत्त डॉ. जतिंदर गुलाटी ने कहा कि महिलाएं एक हिंसा मुक्त परिवेश में सम्मानपूर्वक जीवन जी सकें, इसके लिए उन्हें सहयोग देने के साथ-साथ उनका आर्थिक सशक्तीकरण भी जरूरी है। उन्होंने महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य व उनको प्रभावित करने वाले कारकों पर भी प्रकाश डाला। एचएयू से सेवानिवृत्त प्रोफेसर लाली यादव ने कहा कि लिंग संवेदीकरण के लिए जो नीतियां बनाई जाती हैं उनको जमीनी स्तर पर शोध करके ही लागू करना चाहिए। इसके लिए महिलाओं व पुरूषों के साथ-साथ सभी आयुवर्ग के लोगों को जागरूक किया जाना चाहिए। कार्यक्रम की परियोजना प्रभारी डॉ. कृष्णा दूहन ने सभी प्रतिभागियों व वक्ताओं का स्वागत किया जबकि डॉ. नीलम रोज ने इस ऑनलाइन विचार मंथन सत्र के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. संगीता सी सिंधु व पूनम मलिक ने संयुक्त रूप से किया। उन्होंने बताया कि इस दौरान दो मुद्दे प्रमुखता से उभर कर सामने आए हैं। एक तो परिजन अपने बच्चों को एक-दूसरे के व्यक्तित्व का सम्मान करना सिखाएं और दूसरा स्कूल व कॉलेज में व्यक्तित्व विकास के लिए अलग से पाठ्यक्रम होना चाहिए जिसमें लैंगिक समानता पर जोर दिया जाए।

कार्यक्रम के समापन अवसर पर डॉ.किरण सिंह ने सभी प्रतिभागियों व वक्ताओं का धन्यवाद किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान महाविद्यालय की प्राध्यापकों, जिला बाल समेकित विभाग की अधिकारियों के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों ने अपने विचार रखे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	**07.12.2020**	--	--

विश्व मृदा दिवस पर मृदा परीक्षण आधारित फसल प्रणाली परियोजना के तहत किया गया कार्यक्रम

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। किसान अपने खेत में जैविक खादों का उपयोग कर मृदा की उर्वरा शक्ति को बढ़ा सकते हैं। इसके लिए रासयनिक खादों का प्रयोग कम करना होगा। ये विचार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मृदा वैज्ञानिक डॉ. विशाल गोयल ने कहे। वे कृषि महाविद्यालय के मृदा विभाग की ओर से विश्व मृदा दिवस पर आयोजित एक ऑनलाइन कार्यक्रम के तहत किसानों से रूबरू हो रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली व भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान भोपाल द्वारा वित्त पोषित परियोजना 'मृदा परीक्षण आधारित फसल प्रणाली' के तहत किया गया।

परियोजना के प्रभारी डॉ. विशाल गोयल ने कहा कि किसान कई बार अपने खेतों में पौधों में आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति न कर पाने के कारण बेहतर उत्पादन हासिल नहीं कर पाते। इसलिए समय-समय पर अपने खेत की मिट्टी की जांच अवश्य करवानी चाहिए। यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति देसी खादों व उर्वरकों द्वारा की जानी चाहिए। उर्वरकों की मात्रा का निर्धारण करते समय मिट्टी की उपजाऊ शक्ति तथा फसल द्वारा अवशोषित किये गये पोषक तत्वों की मात्रा को ध्यान में रखना आवश्यक है।

फसल विविधिकरण पर दिया जोर

मृदा वैज्ञानिक डॉ. कृष्ण भारद्वाज ने बताया कि इस ऑनलाइन कार्यक्रम के दौरान हिसार जिले के ज्ञानपूरा एवं न्यौली कला गांव के किसानों के साथ वैज्ञानिकों ने अपने विचार साझा किए। इस दौरान वैज्ञानिक डॉ. उषा कौशिक, डॉ. कौटिल्य चौधरी व डॉ. ममता फोगाट ने भी किसानों से रूबरू होते हुए मृदा स्वास्थ्य को लेकर जानकारी प्रदान की।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	**07.12.2020**	--	--

सशक्त समाज के लिए लिंग समानता जरूरी : डॉ. ढांडा

हिसार/07 दिसंबर/रिपोर्टर

अभिभावकों को बेटा व बेटी में कोई फर्क नहीं समझना चाहिए बल्कि उन्हें आगे बढ़ने के समान अवसर प्रदान करने चाहिए। लड़का व लड़की से उन्हें समान अपेक्षाएं भी रखनी चाहिए। साथ ही अभिभावक अपने बच्चों को एक-दूसरे का सम्मान करना भी सिखाएं। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान महाविद्यालय में ऑनलाईन माध्यम से 'लिंग संवेदीकरण-मुद्दे और चुनौतियां' विषय पर आयोजित विचार मंथन सत्र के दौरान निकलकर सामने आए। होम साईंस महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बिमला ढांडा ने कहा कि एक सशक्त समाज के लिए लिंग समानता बहुत ही जरूरी है। समानता एक सुंदर और सुरक्षित समाज की वो नींव है जिस पर विकासरूपी इमारत बनाई जा सकती है। उन्होंने बताया कि सरकार ने महिलाओं के खिलाफ हिंसा को समाप्त करने को अपनी प्राथमिकता बनाया है। साथ ही उनकी तस्करी, घरेलू हिंसा तथा यौन शोषण रोकने के लिए विशेष उपाय किए हैं। नीतिगत कार्यक्रमों में लैंगिकता को प्रस्तावित और एकीकृत करने के लिए प्रयास भी किए गए हैं। बालिकाओं का संरक्षण और सशक्तिकरण करने वाले अभियान 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान की शुरुआत की गई, जिसे राष्ट्रीय स्तर पर संचालित किया जा रहा है।

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के कम्युनिटी साईंस महाविद्यालय की पूर्व अधिष्ठाता व सेवानिवृत्त डॉ. जतिंदर गुलाटी ने कहा कि महिलाएं एक हिंसा मुक्त परिवेश में सम्मानपूर्वक जीवन जी सकें, इसके लिए उन्हें सहयोग देने के साथ-साथ उनका आर्थिक सशक्तिकरण भी जरूरी है। उन्होंने महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य व उनको प्रभावित करने वाले कारकों पर भी प्रकाश डाला। एचएयू से सेवानिवृत्त प्रोफेसर लाली यादव ने कहा कि लिंग संवेदीकरण के लिए जो नीतियां बनाई जाती हैं उनको जमीनी स्तर पर शोध करके ही लागू करना चाहिए। इसके लिए महिलाओं व पुरूषों के साथ-साथ सभी आयुवर्ग के लोगों को जागरूक किया जाना चाहिए। कार्यक्रम की परियोजना प्रभारी डॉ. कृष्णा दूहन ने सभी प्रतिभागियों व वक्ताओं का स्वागत किया जबकि डॉ. नीलम रोज ने इस ऑनलाईन विचार मंथन सत्र के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. संगीता सी सिंधु व पूनम मलिक ने संयुक्त रूप से किया। उन्होंने बताया कि इस दौरान दो मुद्दे प्रमुखता से उभर कर सामने आए हैं। एक तो परिजन अपने बच्चों को एक-दूसरे के व्यक्तित्व का सम्मान करना सिखाएं और दूसरा स्कूल व कॉलेज में व्यक्तित्व विकास के लिए अलग से पाठ्यक्रम होना चाहिए जिसमें लैंगिक समानता पर जोर दिया जाए। कार्यक्रम के समापन अवसर पर डॉ. किरण सिंह ने सभी प्रतिभागियों व वक्ताओं का धन्यवाद किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	**07.12.2020**	--	--

होम साइंस कॉलेज में 'लिंग संवेदीकरण-मुद्दे और चुनौतियां' विषय पर विचार मंथन

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। अभिभावकों को बेटा व बेटी में कोई फर्क नहीं समझना चाहिए बल्कि उन्हें आगे बढ़ने के सम्मान अवसर प्रदान करने चाहिए। लड़का व लड़की से उन्हें समान अपेक्षाएं भी रखनी चाहिए। साथ ही अभिभावक अपने बच्चों को एक-दूसरे का सम्मान करना भी सिखाएं। उक्त विचार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान महाविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से 'लिंग संवेदीकरण-मुद्दे और चुनौतियां' विषय पर आयोजित विचार मंथन सत्र के दौरान निकलकर सामने आए। कार्यक्रम का आयोजन नेशनल एग्रीकल्चरल साइंस फंड (एनएएसएफ) एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में इंदिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय की ओर से किया गया।

होम साइंस महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बिमला ढांडा ने कहा कि एक सशक्त समाज के लिए लिंग समानता बहुत ही जरूरी है। समानता एक सुंदर और सुरक्षित समाज की वो नींव है जिस पर विकासरूपी इमारत बनाई जा सकती है। उन्होंने बताया कि सरकार ने महिलाओं के खिलाफ हिंसा को समाप्त करने को अपनी प्राथमिकता बनाया है। साथ ही उनकी तस्करी, घरेलू हिंसा तथा यौन शोषण रोकने के लिए विशेष उपाय किए हैं। नीतिगत कार्यक्रमों में लैंगिकता को प्रस्तावित और एकीकृत करने के लिए प्रयास भी किए गए हैं। बालिकाओं का संरक्षण और सशक्तीकरण करने वाले अभियान 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' अभियान की शुरुआत की गई, जिसे राष्ट्रीय स्तर पर संचालित किया जा रहा है।

एचएयू से सेवानिवृत्त प्रोफेसर लाली यादव ने कहा कि लिंग संवेदीकरण के लिए जो नीतियां बनाई जाती हैं उनको जमीनी स्तर पर शोध करके ही लागू करना चाहिए। इसके लिए महिलाओं व पुरूषों के साथ-साथ सभी आयुवर्ग के लोगों को जागरूक किया जाना चाहिए। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान महाविद्यालय की प्राध्यापकों, जिला बाल समेकित विभाग की अधिकारियों के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों ने अपने विचार रखे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	**07.11.2020**	**01**	**01**

खेत की मिट्टी की जांच अवश्य करवाएं : डॉ. गोयल

हिसार/07 दिसंबर/रिपोर्टर

किसान अपने खेत में जैविक खादों का उपयोग कर मृदा की उर्वरा शक्ति को बढ़ा सकते हैं। इसके लिए रसायनिक खादों का प्रयोग कम करना होगा। ये विचार चौधरी चरणसिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मृदा वैज्ञानिक डॉ. विशाल गोयल ने कहे। वे कृषि महाविद्यालय के मृदा विभाग की ओर से विश्व मृदा दिवस पर आयोजित एक ऑनलाईन कार्यक्रम के तहत किसानों से रूबरू हो रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली व भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान भोपाल द्वारा वित्त पोषित परियोजना 'मृदा परीक्षण आधारित फसल प्रणाली' के तहत किया गया। यह कार्यक्रम भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान भोपाल से इस परियोजना के समन्वयक डॉ. प्रदीप डे के मार्गदर्शन में किया गया। इस परियोजना के प्रभारी डॉ. विशाल गोयल ने कहा कि किसान कई बार अपने खेतों में पौधों में आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति न कर पाने के कारण बेहतर उत्पादन हासिल नहीं कर पाते। इसलिए समय-समय पर अपने खेत की मिट्टी की जांच अवश्य करवानी चाहिए। यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति देसी खादों व उर्वरकों द्वारा की जानी चाहिए। उर्वरकों की मात्रा का निर्धारण करते समय मिट्टी की उपजाऊ शक्ति तथा फसल द्वारा अवशोषित किये गये पोषक तत्वों की मात्रा को ध्यान में रखना आवश्यक है। मृदा वैज्ञानिक डॉ. कृष्ण भारद्वाज ने बताया कि इस कार्यक्रम के दौरान हिसार जिले के ज्ञानपूरा एवं न्यौली कलां गांव के किसानों के साथ वैज्ञानिकों ने अपने विचार सांझा किए। कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों के सवालों का जवाब देते हुए जैविक खाद से फसल उत्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव संबंधी भ्रांतियों को भी दूर किया। साथ ही किसानों से फसल विविधिकरण पर भी जोर देने का आह्वान किया ताकि मृदा की उर्वरा शक्ति बनी रहे। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम में किसानों को अधिक उत्पादन देने वाली फसलों की उन्नत व विकसित किस्मों के बारे में जानकारी दी गई। इस दौरान वैज्ञानिक डॉ. उषा कौशिक, डॉ. कौटिल्य चौधरी व डॉ. ममता फोगाट ने भी किसानों से रूबरू होते हुए मृदा स्वास्थ्य को लेकर जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम में किसान राजकुमार, रोहताश, प्रताप, राजेश, महावीर, दयानंद, विनोद, रामनिवास, बलवान, बलदेव, महासिंह, मेवालाल आदि ने हिस्सा लिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	**07.12.2020**	--	--

जैविक खादों से बढ़ेगा मृदा की उर्वरा शक्ति : डॉ. विशाल गोयल

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 7 दिसम्बर : किसान अपने खेत में जैविक खादों का उपयोग कर मृदा की उर्वरा शक्ति को बढ़ा सकते हैं। इसके लिए रासयनिक खादों का प्रयोग कम करना होगा। ये विचार चौधरी चरणसिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मृदा वैज्ञानिक डॉ. विशाल गोयल ने कहे। वे कृषि महाविद्यालय के मृदा विभाग की ओर से विश्व मृदा दिवस पर आयोजित एक ऑनलाइन कार्यक्रम के तहत किसानों से रूबरू हो रहे थे। इस परियोजना के प्रभारी डॉ. विशाल गोयल ने कहा कि किसान कई बार अपने खेतों में पौधों में आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति न कर पाने के कारण बेहतर उत्पादन हासिल नहीं कर पाते। इसलिए समय-समय

पर अपने खेत की मिट्टी की जांच अवश्य करवानी चाहिए। यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति देसी खादों व उर्वरकों द्वारा की जानी चाहिए। उर्वरकों की मात्रा का निर्धारण करते समय मिट्टी की उपजाऊ शक्ति तथा फसल द्वारा अवशोषित किये गये पोषक तत्वों की मात्रा को ध्यान में रखना आवश्यक है।